गुन लिखने वालो सो एह, आपन मांहें बैठा जेह।
इंद्रावती कहे दिल दे रे दे, जिन गुन किए सो ए रे ए।। १४ ।।

गुण लिखने वाले भी यही प्राणनाथ हैं जो अपने बीच में बैठे हैं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इनको अपना दिल दो। जिन्होंने हमारे ऊपर इतने एहसान किए हैं, वह यही अपने धनी हैं।

तेरे केहेना होए सो केहे रे केहे, लाभ लेना होए सो ले रे ले।
तारतम केहेत है आ रे आ, हजार बार कहूं हां रे हां।। १५ ।।

हे साथजी! अब तुमको कुछ कहना हो तो कहो। लाभ लेना है तो लो। तारतम वाणी कहती है, मेरे प्यारे सुन्दरसाथ! आओ, तुम्हारा हजार बार स्वागत है।

मायासों कीजो ना रे ना, नाबूद फेरा जिन खा रे खा।
धनी के चरने जा रे जा, ऐसा न पावे दा रे दा।। १६ ।।

माया को छोड़ दो और व्यर्थ में आवागमन के चक्कर में मत पड़ो। धनी के चरणों में जाओ। फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

जो चूक्या अबको ता रे ता, तो सिर में लगसी घा रे घा।
संसार में नहीं कछू सा रे सा, श्री धामधनी गुन गा रे गा।। १७ ।।

यदि अब की बार चूक गए तो ऐसा घाव लगेगा जो सहन नहीं होगा, अर्थात् जन्म-मरण में पड़ना होगा। संसार में कुछ भी नहीं है, इसलिए धनी के गुण गाओ।

लीजो मूल को भाओ रे भाओ, जिन छोड़े अपनो चाहो रे चाहो।
प्रेमें पकड़ पिउ के पाए रे पाए, ज्यों सब कोई कहे तोको वाहे रे वाहे।। १८ ।।

अपने मूल परमधाम की भावनाओं को समझ कर अपनी चाहनाओं को पूरा करो और प्रेम से धनी को अपना लो, जिससे तुम्हें सब कोई वाह-वाह कहे।

।। प्रकरण ।। ३५ ।। चौपाई ।। १०६० ।।

गुन केते कहूं मेरे पिउ जी, जो हमसों किए अनेक जी।
ए बुध इन आकार की, क्यों कहे जुबां विवेक जी।। १ ।।

हे मेरे पिउजी! मैं आपके एहसानों, जो आपने मेरे ऊपर किए हैं, का कहां तक वर्णन करूं? यह मेरी बुद्धि झूठे आकार की है, इसलिए इस जबान से वर्णन कैसे करूं?

माया मांगी सो देखाए के, भानी मन की भ्रांत जी।
सब सुख दिए जगाए के, कई विध के दृष्टांत जी।। २ ।।

हमने परमधाम में जो माया मांगी थी वह दिखाकर हमारे संशय मिटा दिए और तरह तरह के दृष्टान्त देकर जागृत करके सुख दिए हैं।

बृज के सुख इत आए के, हमको अलेखे दिए जी।
रासके सुख इत देएके, आप सरीखे किए जी।। ३ ।।

ब्रज के सुख भी यहां आकर आपने बेशुमार दिए तथा रास के सुख देकर अपने समान कर लिया।

Nijanand App

कई विध विध के सुख धाम के, जो हमको दिए इत जी।
तारतम करके रोसनी, कई बिध करी प्राप्त जी।। ४ ।।

परमधाम के भी कई सुख हमको यहीं पर दिए। हमने भी तारतम वाणी को समझकर कई तरह से उनको प्राप्त किया।

सेहेजल सुखमें झीलते, काहूं दुख न सुनिया नाम जी।
सो मायामें इत आए के, सुख अखंड देखाया धाम जी।। ५ ।।

परमधाम में हम सहज में आराम से रहते थे। कभी दुःख का नाम तक नहीं सुना था। अब दुःख रूपी माया में आकर भी अखण्ड परमधाम के सुख की लज्जत दी।

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, हमको लाड़ लड़ाए जी।
निरमल नेत्र किए जो आतम के, परदे दिए उड़ाए जी।। ६ ।।

श्री इन्द्रावती जी बड़ी उमंग के साथ कहती हैं कि आपने हमको बहुत ही लाड लडाए हैं तथा हमारी आत्मा के नेत्रों को तारतम वाणी से निर्मल करके सब संशय मिटा दिए हैं।

आप पेहेचान कराई अपनी, लई अपने पास जगाए जी।
बड़ी बड़ाई दई आपथें, लई इंद्रावती कंठ लगाए जी।। ७ ।।

आपने अपनी पहचान स्वयं कराई और जागृत करके अपने पास बुलाया। अपने से भी अधिक बड़ाई (मान) देकर श्री इन्द्रावतीजी को अपने गले से लगा लिया।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। १०६७ ।।

नोट—श्यामजी के मन्दिर में श्यामाजी महारानी को (देवचन्द्रजी को) धाम धनीजी ने दर्शन दिया और उन्हें अपनी, श्यामाजी की, क्षर, अक्षर तथा अक्षरातीत के ब्रह्माण्डों की, ब्रज, रास, जागनी और धाम की लीलाओं की पहचान कराकर जागृत किया और उनके हृदय में विराजमान हो गए।

।। प्रगट वाणी ।।

निजनाम श्रीकृष्ण जी, अनादि अछरातीत।
सोतो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत।। १ ।।
श्री स्यामाजी वर सत्य हैं, सदा सत दुख के दातार।
विनती एक जो वल्लभा, मो अंगना की अविधार।। २ ।।
वानी मेरे पिउ की, न्यारी जो संसार।
निराकार के पार थें, तिन पार के भी पार।। ३ ।।
अंग उत्कंठा उपजी, मेरे करना एह विचार।
ए सत वानी मथ के, लेऊं जो इनको सार।। ४ ।।
इन सार में कई सत सुख, सो मैं निरने करूं निरधार।
ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्ट को, तो मैं अंगना नार।। ५ ।।
जब ए सुख अंग में आवहीं, तब छूट जाएं विकार।
आयो आनन्द अखंड घर को, श्री अछरातीत भरतार।। ६ ।।

Nijanand App